ISSN (ELECTRONIC): 2945-3135

चन्द्र प्रकाश & महिपाल मेहरा (2024). ***सोशल मीडिया के उपयोग से युवाओं में बढ़ता सामाजिक-सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों का ह्रयस: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन.*** International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews. 3(2). 218-229.

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH & REVIEWS

journal homepage: www.ijmrr.online/index.php/home

सोशल मीडिया के उपयोग से युवाओं में बढ़ता सामाजिक-सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों का ह्रयस: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ० चन्द्र प्रकाश[1] & महिपाल मेहरा[2]

[1]असिस्टेन्ट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग राजकीय महिला स्नातकोत्तर वाणिज्य महाविद्यालय, हल्द्वानी (नैनीताल)

[2]शोध छात्र, समाजशास्त्र विभाग श्री राम सिंह धौनी राजकीय महाविद्यालय जैती. (अल्मोड़ा)

Email- mahipalmehra19@gmail.com

How to Cite the Article: चन्द्र प्रकाश & महिपाल मेहरा (2024). ***सोशल मीडिया के उपयोग से युवाओं में बढ़ता सामाजिक-सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों का ह्रयस: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन.*** International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews. 3(2). 218-229.

DOI: https://doi.org/10.56815/ijmrr.v3i2.2024.218-229

Keywords	*Abstract*
सोशल मीडिया, युवा, सामाजिक-सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्य, ह्रयस	वर्तमान प्रौद्योगिक युग में जहां एक ओर सोशल मीडिया उपयोग से संपूर्ण विश्व का भ्रमण (आभासी रूप से) एक स्थान पर विद्यमान होकर किया जा सकता है, वहीं दूसरी ओर इससे पारंपरिक संस्कृति एवं नैतिक मूल्यों का पतन भी हो रहा है। खासकर युवाओं में संस्कृति एवं नैतिक मूल्यों के प्रति कमी का होना एक गंभीर चिंता का विषय हैं। शोध पत्र में इन्हीं विषयों पर ध्यान केंद्रित किया गया हैं। अध्ययन हेतु उत्तराखण्ड राज्य के कुमाऊँ मण्डल के नैनीताल जपनद के दो सबसे बड़े महाविद्यालय, छात्र संख्या के आधार पर चयनित किये गये। मोतीराम

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

चन्द्र प्रकाश & महिपाल मेहरा (2024). ***सोशल मीडिया के उपयोग से युवाओं में बढ़ता सामाजिक-सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों का ह्रयस: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन.*** International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews. 3(2). 218-229.

	बाबूराम राजकीय स्नातकोत्तर माहाविद्यालय हल्द्वानी, नैनीताल एवं प्यारेलाल नन्दकिशोर गलवलिया राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामनगर, नैनीताल के छात्रों को अध्ययन में सम्मिलित किया गया है। तथा साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से इन्हीं महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों उत्तरदाताओं से सूचनाएं एकत्र की गई। अध्ययन का उद्देश्य युवाओं में घटते नैतिक मूल्यों का स्तर और सांस्कृतिक परिवेश में हो रहे परिवर्तनों में सोशल मीडिया की भूमिका का अध्ययन किया गया। अध्ययन से स्पष्ट है कि बढ़ते सोशल मीडिया उपयोग से युवाओं के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों में परिवर्तन और उनका हास हो रहा हैं।

प्रस्तावना :

किसी भी देश के विकास में युवाओं की भूमिका महत्वपूर्ण होती है तथा ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि जिस देश की अधिकांश आबादी में युवा होंगे, उस देश का विकास उतनी ही तेजी से होगा। वर्तमान भारत को युवाओं का देश कहा जाता है, क्योंकि यहां की जनसंख्या में युवाओं की भागीदारी अधिक है, जो कि दुनिया की सबसे बड़ी युवा आबादी में से एक हैं। संयुक्त राष्ट्र ने 'युवा' को परिभाषित करते हुए माना है कि 'युवाओं को 15 से 24 वर्ष के बीच के लोगों के रूप में देखा जा सकता हैं।[1] सामाजिक विकास आयोग की रिपोर्ट, जिसके पैंतालीसवे सत्र सन् 2007 में संपन्न हुआ, कि 14वीं बैठक में कमीशन के अध्यक्ष ने "यूथ के लिए वर्ल्ड प्रोग्राम ऑफ एक्शन सप्लीमेंट" का एक ड्रॉफ्ट रेजोल्यूशन पेश किया और साथ ही इस बैठक में यूथ एम्प्लॉयमेंट और सोशल डेवलयमेंट के अवसर और चुनौतियों के बारे में बात की।[2]

मीडिया संचार का वह साधन है जिसके उपयोग से सूचनाओं, विचारों का आदान-प्रदान एवं मनोरंजन हेतु उपयोग किया जाता है। मीडिया लैटिन शब्द "मीडियस" से बना है, जिसका अर्थ है "बीच का" या "मध्यवर्ती।" मीडिया को ऐसे माध्यम और उपकरण के रूप देखा जा सकता हैं, जिसका उपयोग सूचनाओं को संरक्षित करने, और एक स्थान से दूसरे स्थान में भेजने के लिए उपयोग किया जाता है। मीडिया को एक ऐसे संस्थान के रूप में भी जाना जा सकता है जो लोगों के लिए सूचना एवं मनोरंजन को बनाने एवं एक-दूसरे तक फैलाने का कार्य करता हैं। मीडिया के कुछ मुख्य उदारण इसप्रकार है समाचार पत्र, पत्रिकाएं, किताबें, रेडियों, टेलीविजन,

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

चन्द्र प्रकाश & महिपाल मेहरा (2024). ***सोशल मीडिया के उपयोग से युवाओं में बढ़ता सामाजिक-सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों का ह्रयस: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन.*** International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews. 3(2). 218-229.

सिनेमा, इंटरनेट और सोशल मीडिया आदि। मीडिया को मुख्यतः तीन भागों में बाटा गया हैं प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और डिजिटल मीडिया।

प्रिंट मीडिया: यह मीडिया का सबसे पुराना एवं पारंपरिक रूप है. इसमें सूचनाओं को प्रिंट करके कागज या अन्य दूसरे माध्यमों से दर्शाया जाता है। इसके अन्तगत समाचार पत्र-पत्रिकाएँ, किताबें आदी मुद्रित सामग्री आते हैं।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में सूचनाओं और सामग्री को एक स्थान से दूसरे स्थान भेजने या प्राप्त करने के लिए इलेक्ट्रॉनिक उपकरण और तरंगों का उपयोग किया जाता हैं। यह प्रिंट मीडिया की तुलना में सूचनाओं का आदान-प्रदान तेजी से करता हैं। इसके अन्तर्गत रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा आदि सम्मिलित हैं।

डिजिटल मीडिया: यह मीडिया का सबसे नवीनतम माध्यम है जिसमें सूचनाओं के आदान-प्रदान, विडियो कॉलिग, फोटोज एवं ब्लॉगिंग करने और उसे एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजने या साझा करने के लिए डिजिटल तकनीक का उपयोग किया जाता हैं। इसके अन्तर्गत सोशल मीडिया, वेबसाइट, इंटरनेट, स्मार्टफोन आदि आते हैं।[3] यह मीडिया का सबसे सरलतम एवं तेजी से सूचनाओं के प्रेषण का माध्यम हैं।

सोशल मीडिया, डिजिटल संचार का एक तरीका है जिसके द्वारा उपयोगकर्ता सूचना, विचार, व्यक्तिगत संदेश एवं सामग्री (कंटेट) साझा करने के लिए ऑनलाइन समुदाय बनाते हैं।[4] सोशल मीडिया "वेबसाइट और कंप्यूटर प्रोग्राम" जो लोगों को इंटरनेट की सहायता से सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट पर वार्तालाप करने, सूचनाओं के आदान-प्रदान, तस्वीरें साझा करने एवं वीडियोज एक-दूसरे को भेजने की सुविधा प्रदान करता हैं।[5] सोशल मीडिया युवाओं के लिए जितना लाभाकारी है, उतना ही इसके अधिक उपयोग के प्रभाव से युवा अपनी संस्कृति एवं नैतिक मूल्यों को भूलते जा रहे हैं। जहां एक तरफ सोशल मीडिया उपयोग ने विश्व में सूचना क्रांति ला दी है, वही दूसरी ओर युवाओं में सोशल मीडिया के बढ़ते उपयोग से, युवा सामाजिक होना भूल सा गये हैं। युवा समाज में लोगों के बीच जाना और क्रिया करने के बजाए एकान्त में सोशल मीडिया साइट्सों के आभासी दुनिया में रहना अधिक पसंद कर रहे हैं। जिससे उनमें नैतिक मूल्यों की कमी और वह अपने सांस्कृतिक जीवन के प्रकाश और कोमलता को भूलते जा रहे हैं। समाजशास्त्री मौलिनोस्वकी ने कहा कि "संस्कृति प्राप्त आवश्यकताओं की एक व्यवस्था तथा उद्देश्यमूलक कियाओं की एक संगठित व्यवस्था हैं।"[6] राधाकमल मुकर्जी ने अपनी पुस्तक

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

चन्द्र प्रकाश & महिपाल मेहरा (2024). ***सोशल मीडिया के उपयोग से युवाओं में बढ़ता सामाजिक-सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों का ह्रास: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन.*** International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews. 3(2). 218-229.

"द सोशल स्ट्रक्चर ऑफ वैल्यूज" (1949) और "द डायमेन्संस ऑफ वैल्यूज" (1964) में मूल्य की परिभाषा देते हुए कहां की 'मूल्य समाज द्वारा निर्धारित इच्छाएँ अथवा लक्ष्य हैं, और जिन्हें सामाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा स्वीकार किया जाता हैं।[7]

साहित्य समीक्षा :

बलबीर सिंह ने अपने अध्ययन में माना है कि सोशल मीडिया के कारण लोगों के बहुत से महत्वपूर्ण कार्य प्रभावित हो रहे हैं। क्योंकि इससे व्यक्तियों का मुख्य कार्य से हटकर अन्य कार्यों में मन लग जाता हैं, जिससे व्यक्ति अपने मुख्य कार्य को सही ढंग से संपादित नहीं कर पाता हैं। युवाओं पर सोशल मीडिया का सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों तरह के प्रभाव देखे जा सकते हैं, तथा सोशल मीडिया ने 'युवाओं को प्रभावित कर एक नया जीवन यापन करने की संस्कृति विकसित की हैं।'

महविश राबिया एवं अन्य ने अपने शोध में मीडिया, 'फेसबुक, ट्विटर (X), व्हाट्सएप, मैसेंजर और इंस्टाग्राम' आदि अनुप्रयोगों का एक समूह के रूप में परिभाषित किया है। और कहा की सोशल मीडिया साइट्सों के उपयोग से 'युवाओं' के व्यवहार को प्रभावित किया है, तथा युवा अपनी ही दुनिया में अकेले पड़ते जा रहे हैं। और समाज में रहकर कैसे व्यवहार करना चाहिए उनको इस बात का ज्ञान ही नहीं है, क्योंकि वह अपना अधिकांश समय सोशल मीडिया साइट्सों पर व्यतीत कर रहे हैं।

ओमप्रकाश शर्मा ने अपने शोध पत्र 'सोशल मीडिया का बढ़ता उपयोग युवा पीढ़ी के लिए अवसर एवं चुनौतियां' में बताया कि युवा सोशल मीडिया नेटवर्किंग साइट्सों का उपयोग किए बिना खुद की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। तथा वह सुब-शाम सोशल मीडिया पर सक्रिय रहकर अपना अधिकांश समय बिताना पदंस करते हैं। सोशल मीडिया जोखीम युवाओं के लिए इसके लाभ से कम हैं, 'इसका उपयोग आसान है इसीलिए यह मनुष्यों के लिए वरदान हैं।'

सुशील कुमार मेहता ने अपना शोध ग्रामीण युवाओं पर किया और अपने अध्ययन में पाया कि ग्रामीण युवा 'व्हाट्सएप, यूट्यूब, और फेसबुक' जैसे सोशल मीडिया साइट्सों का अधिक उपयोग कर रहे हैं, और साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले युवाओं की दिनचर्या को सोशल मीडिया ने बहुत अधिक प्रभावित किया है। जहां ग्रामीण युवा पहले जल्दी सोना व जल्दी उठा करते थे, सोशल मीडिया उपयोग के बाद यह दिनचर्या उल्टा होने लगी है अब देर से सोना और सुबह देर तक उठना सामिल हैं।

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

चन्द्र प्रकाश & महिपाल मेहरा (2024). ***सोशल मीडिया के उपयोग से युवाओं में बढ़ता सामाजिक-सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों का ह्रास: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन.*** International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews. 3(2). 218-229.

शोध पत्र के उद्देश्य :

- बढ़ते सोशल मीडिया उपयोग से युवाओं के सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
- सोशल मीडिया के अधिक उपयोग से युवाओं के नैतिक मूल्यों में होने वाले हास का अध्ययन करना हैं।

अध्ययन क्षेत्र एवं शोध पद्धति :

प्रस्तुत शोध पत्र का अध्ययन क्षेत्र उत्तराखण्ड राज्य के नैनीताल जनपद में स्थित राजकीय महाविद्यालय हैं। एवं वर्तमान में नैनीताल जनपद के 11 राजकीय महाविद्यालय स्थित हैं। उद्देश्यपूर्ण निदर्शन का उपयोग करते हुए मोतीराम बाबूराम राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हल्द्वानी एवं प्यारेलाल नन्दकिशोर गलवलिया राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामनगर का अध्ययन के रूप में चयन किया गया। तथा यह कार्य अन्वेषणात्मक एवं वर्णात्मक शोध अभिकल्प पर आधारित है। इन्हीं दोनों महाविद्यालयों के स्नातक स्तर में प्रवेशित छात्र-छात्रायें अध्ययन की इकाई हैं। दोनों महाविद्यालयों में सत्र 2022-23 में स्नातक स्तर में प्रवेशित छात्रों की कुल संख्या 13,184 थी। तथा सभी छात्रों से सूचना एकत्रित्र कर पाना कठिन कार्य था। अतः दैव निदर्शन पद्धति द्वारा 13,184 छात्रों में से 3 प्रतिशत छात्रों का उत्तरदाता के रूप में चयन किया गया। तथा इस तरह से कुल 396 चयनित उत्तरदाताओं (छात्र-छात्राओं) से साक्षात्कार अनुसूची का उपयोग कर प्राथिमक सूचनाएं एकत्रित की गई। और द्वितियक आकंड़ों के लिए समाचार पत्रों, वेबसाइटों, शोध ग्रन्थों एवं शोध पत्र-पत्रिकाओं की सहायता ली गई।

21 वीं सदी के इस दौर में जहा सोशल मीडिया की लोकप्रियता युवाओं में बढ़-चढ़कर देखने को मिल रही है, वहीं इसके उपयोग या लत के कारण युवाओं का बाहरी दुनिया से संपर्क नहीं के बराबर होता जा रहा हैं। वहीं दूसरी तरफ युवा अपनी संस्कृति को भूलते जा रहे है, जिसका एक कारण यह हो सकता है कि युवा सोशल मीडिया के इस आभासी दुनिया में रहना अधिक पसंद कर रहे हैं। इसी सन्दर्भ में उत्तरदाताओं से उनकी अभिवृत्ति ज्ञात करने हेतु पूछा गया कि वे इस बात से कितना सहमत है कि सोशल मीडिया उपयोग के कारण युवा अपनी संस्कृति को भूलते जा रहे हैं। उक्त सन्दर्भ में प्राप्त प्रत्युत्तरों को सारणी संख्या 01 में दर्शाया गया हैं।

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

चन्द्र प्रकाश & महिपाल मेहरा (2024). ***सोशल मीडिया के उपयोग से युवाओं में बढ़ता सामाजिक-सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों का ह्रास: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन.*** International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews. 3(2). 218-229.

सारणी संख्या 01

बढते सोशल मीडिया उपयोग से युवा पीढ़ी द्वारा अपनी संस्कृति को भूलने के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं के प्रत्युत्तरों की सहमति का विवरण :

क्रम संख्या	प्रत्युत्तर का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिशत
1	पूर्णतः सहमत	70	17.68
2	सहमत	200	50.51
3	असहमत	100	25.25
4	पूर्णतः असहमत	26	6.56
	योग	**396**	**100.00**

उक्त प्रश्न के सन्दर्भ में अधिकाश उत्तरदाता (68.19 प्रतिशत) 'पूर्णतः सहमत और सहमत' दिखाई देते है साथ ही असहमत (25.25 प्रतिशत) एवं 'पूर्णतः असहमत (6.56 प्रतिशत), प्रत्युत्तर देने वाले उत्तरदाताओं की संख्या भी पर्याप्त हैं। अनौपचारिक वार्तालाप में जब उक्त सन्दर्भ में उत्तदाताओं से बातचीत की गई तो उत्तरदाताओं का मानना है कि सोशल मीडिया के उपयोग से उनके अनेक विदेशी मित्र भी बन गये है और साथ ही सोशल मीडिया माध्यमों से उन्हें पश्चिमी सभ्यता एवं संस्कृति के बारे में जानकारी मिलती रहती है और वे उसे अपने जीवन में स्थान दे रहे हैं।

सोशल मीडिया उपयोग के दौरान विभिन्न प्रकार के विज्ञापन स्वतः ही संचालित होने लगते है। उनमें से कुछ विज्ञापन अक्सर इतने प्रभावी ढंग से नियोजित होते हैं कि उपयोगकर्ता चाहकर भी उन्हें हटा नहीं सकता है। इसी सन्दर्भ में उत्तरदाताओं से पूछा गया की क्या सोशल मीडिया पर दिखाई जाने वाले भ्रमित विज्ञापनों का लोगों के जीवन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है? उक्त सन्दर्भ में प्राप्त प्रत्युत्तरों को सारणी संख्या 02 में दर्शाया गया हैं।

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

चन्द्र प्रकाश & महिपाल मेहरा (2024). ***सोशल मीडिया के उपयोग से युवाओं में बढ़ता सामाजिक-सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों का ह्रास: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन.*** International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews. 3(2). 218-229.

सारणी संख्या 02

सोशल मीडिया साइट्स पर दिखाई जाने वाले भ्रमित विज्ञापनों का लोगों के जीवन पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभाव के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं के प्रत्युत्तरों का वर्गीकरण :

कम संख्या	प्रत्युत्तर का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिशत
1	पूर्णतः सहमत	117	29.55
2	सहमत	192	48.48
3	असहमत	18	4.54
4	पूर्णतः असहमत	14	3.53
5	कह नहीं सकते	55	13.9
	योग	**396**	**100.00**

इस सन्दर्भ में अधिकांश उत्तदाता (78.03 प्रतिशत) ने सोशल मीडिया विज्ञापनो के नकारात्मक प्रभाव के सन्दर्भ में अपनी सहमति व्यक्त की। (पूर्णतः सहमत 29.55 प्रतिशत एवं सहमत 48.48 प्रतिशत) और मात्र 8.07 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने ही अपने प्रत्युत्तर असहमत और पूर्णतः असहमत में दिया है। तथा 13.90 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अपने प्रत्युत्तर 'कह नहीं सकते' में दिया हैं। रपष्ट है कि सोशल मीडिया पर प्रसारित होने वाले विज्ञापनों से अधिकांश उत्तरदाताओं पर नकारात्मक प्रभाव दृष्टिगोचर होता हैं।

वर्तमान समय में विभिन्न प्रकार के सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म उपलब्ध हैं। जिसका उपयोग व्यक्ति अपने जरूरतों व कार्य के अनुरूप करता है, परन्तु कुछ मीडिया प्लेटफॉर्म ऐसे भी है जिनके उपयोग से समाज में नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है, और ये सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म समाज में अराजकता कि स्थिति उत्पन्न कर सकती हैं। तथा कुछ प्लेटफॉर्म लोगों के जीवन में सकारात्मकता भी लाते हैं। इसी सन्दर्भ में उत्तरदाताओं से ज्ञात किय गया कि समाज पर सबसे

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

चन्द्र प्रकाश & महिपाल मेहरा (2024). ***सोशल मीडिया के उपयोग से युवाओं में बढ़ता सामाजिक-सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों का ह्रयस: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन.*** International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews. 3(2). 218-229.

अधिक नकारात्मक प्रभाव डालने वाले प्लेटफॉर्म कौन सा है, इस सन्दर्भ में प्राप्त प्रत्युत्तरों को सारणी संख्या 03 में दर्शाया गया हैं।

सारणी संख्या 03

सामाज पर सबसे अधिक नकारात्मक प्रभाव डालने वाले सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं का वर्गीकरण :

कम संख्या	प्रत्युत्तर का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिशत
1	स्नैपचैट	29	7.32
2	फेसबुक	66	16.67
3	इंस्टाग्राम	213	53.79
4	यूटयूब	48	12.12
5	एक्स	—	—
6	अन्य	40	10.10
	योग	**396**	**100.00**

सोशल मीडिया साइट्स के अनेक प्लेटफॉर्म उपलब्ध हैं जिनका समाज पर सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह का प्रभाव पड़ता हैं। यह प्रभाव कभी-कभी समाज के लोगो की चिंता और अवसाद को बढ़ा देता है। इसी कम में छात्रों से यह ज्ञात किया गया कि कौन से सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का समाज पर सबसे अधिक नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा हैं। इस सन्दर्भ में सबसे अधिक 53.79 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अपने प्रत्युत्तर में 'इंस्टग्राम' को प्राथमिकता दी हैं, तथा शेष अन्य प्लेटफॉर्म जैसे फेसबुक, यूटयूब एवं स्नैपचैट को प्राथमिकता देने वाले उत्तरदाताओं की संख्या प्रतिशत 36.11 है। मात्र 10.10 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अपने प्रत्युत्तर 'अन्य' मे दिया हैं। आकंड़ों के विशलेषण से स्पष्ट होता है कि लगभग सभी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का समाज पर

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

चन्द्र प्रकाश & महिपाल मेहरा (2024). ***सोशल मीडिया के उपयोग से युवाओं में बढ़ता सामाजिक-सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों का ह्रयस: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन.*** International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews. 3(2). 218-229.

कुछ न कुछ नकारात्मक प्रभाव अवश्य पड़ रहा हैं। तथा इंस्टाग्राम एक ऐसा सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म है जिसका समाज पर अन्य सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म की तुलना में अधिक नकारात्मक प्रभाव देखा जा सकता हैं। जिसके एक कारण यह भी हो सकता है कि अधिकांश लोग इंस्टाग्राम पर अपनी फोटों या विडियोंज अपलोड कर फेमस होना चाहते हैं, जिसके लिए वह अपनी आपत्तिजनक फोटों एवं विडियोंज अपलोड कर अधिक लाइक और फॉलोअर्स बनाना चाहते हैं।

वर्तमान प्रौद्योगिकी युग में जहाँ सोशल मीडिया सूचना प्रचार-प्रसार का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन चुका हैं, वहीं लोगों में इसके प्रति अलग ही उत्साह देखने को मिलता हैं। खास कर युवा अपना अधिकांश समय सोशल मीडिया साइट्स पर बिता रहे हैं। जिससे उनके भीतर या उनके व्यवहार में संस्कृति, रीति रिवाजों एवं परिवार व अपने बड़े-बुजुर्गों के प्रति नैतिकता की भावना को भूलते जा रहे हैं, और इस कारण समाज में सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों का हास हो रहा हैं।

सारणी संख्या 04

सोशल मीडिया उपयोग से सामाजिक-सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों का ह्रयस के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं की सहमति का विवरण :

कम संख्या	प्रत्युत्तर का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिशत
1	पूर्ण सहमत	59	14.90
2	सहमत	147	37.12
3	असहमत	40	10.10
4	पूर्ण असहमत	27	6.81
5	कह नहीं सकते	123	31.07
	योग	**396**	**100.00**

वर्तमान समय में परिवारों का विखंडन एक आम समस्या है, जिसके कई कारण हो सकते हैं, जैसे बदलती जीवनशैली, प्रतिस्पर्धा एवं व्यक्तियों का आत्मर्निभर होना। इसके बदलते स्वरूप के कारण सामाजिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों का हास भी हो रहा है। इसी सन्दर्भ में उत्तरदाताओं से ज्ञात किया गया कि क्या सोशल मीडिया उपयोग से सामाजिक-सांस्कृतिक एवं

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

चन्द्र प्रकाश & महिपाल मेहरा (2024). ***सोशल मीडिया के उपयोग से युवाओं में बढ़ता सामाजिक-सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों का ह्रयस: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन.*** International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews. 3(2). 218-229.

नैतिक मूल्यों का हास हो रहा है? इस सन्दभ में 52.02 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अपने प्रत्युत्तर 'पूर्णतः सहमत एवं सहमत' में दिया हैं। तथा 31.07 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अपने प्रत्युत्तर 'कह नहीं सकते में दिया हैं। मात्र 16.91 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस सन्दर्भ में अपने प्रत्युत्तर कमशः 'असहमत और पूर्ण असहमत' दिया हैं। स्पष्ट है कि सोशल मीडिया युवाओं में नैतिक मूल्यों के हास का एक कारक हैं।

स्कूल, कॉलेजों एवं विश्वविद्यालयों में छात्रों को विभिन्न विषयों का अध्ययन कराया जा रहा हैं। जिसमें विभिन्न प्रकार के व्यवसायीक पाठ्यक्रमों को शामिल किया जा रहा हैं, जिससे छात्रों को कॉलेज अध्ययन के बाद रोजगार सरलता से प्राप्त हो सके। जिस तरह छात्रों में दिन-प्रतिदिन सोशल मीडिया के प्रति उत्साह बढ़ रहा हैं, उसी प्रकार उन्हें सोशल मीडिया के सही-गलत के विषय में स्कूल, कॉलेजों एवं विश्वविद्यालयों में पाठ्यक्रम के रूप में पढ़ाया जाना चाहिए या नहीं इस विषय में छात्रों से प्रश्नों के उत्तर प्राप्त किये गये और जिसे सारणी संख्या 05 में दशार्या गया हैं।

सारणी संख्या 05

क्या सोशल मीडिया उपयोग के बारे मे स्कूल, कॉलेजों एवं विश्वविद्यालयों में पढ़ाया जाना चाहिए के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं का वर्गीकरण :

कम संख्या	प्रत्युत्तर का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	275	69.49
2	नहीं	76	19.19
3	कह नहीं सकते	45	11.37
	योग	**396**	**100.00**

सारणी के आकंड़ों से स्पष्ट होता है कि लगभग (70 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने इस सन्दर्भ में अपनी हांमी भरी और मात्र 30.56 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने हीं अपने प्रत्युत्तर 'नहीं' और 'कह नहीं सकते' में दिया। आकंड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि सोशल मीडिया को एक पाठ्यक्रम के रूप में स्कूल, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में पढाया जाना चाहिए जिससे बढ़ते सोशल मीडिया अपराधों में कमी आये, और छात्र अपने जीवन में इसका सही उपयोग कर सके।

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

चन्द्र प्रकाश & महिपाल मेहरा (2024). ***सोशल मीडिया के उपयोग से युवाओं में बढ़ता सामाजिक-सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों का ह्रास: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन.*** International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews. 3(2). 218-229.

निष्कर्षः

उक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि बढ़ते सोशल मीडिया उपयोग से युवाओं में सामाजिक-सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों का हास हो रहा हैं और बढ़ते सोशल मीडिया उपयोग से युवा अपनी संस्कृति को भूलते जा रहे है, तथा सोशल मीडिया साइट्स पर दिखाई जाने वाले भ्रमित विज्ञापनों से लोगों का जीवन प्रभावित एवं उनमें दिखाई जाने वाली अनैतिक सामग्री का विशेष कर युवाओं के जीवन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा हैं। साथ ही समाज पर सबसे अधिक नकारात्मक प्रभाव जिस सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का पड़ रहा है, वह इंस्टाग्राम हैं क्योंकि अधिकांश छात्र उच्च शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत है और इंस्टाग्राम पर सक्रिय रहना पसंद करते है। जिसमें वे अपने खुद के बनाये हुए रिल्स, छोटे-छोटे विडियोज एवं फोटो अपलोड करते रहते हैं। उच्च शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत अधिकांश युवाओं का मानना है कि सोशल मीडिया को स्कूल, कॉलेजों एवं विश्वविद्यालयों में अध्ययन के रूप में पढ़ाया जाना चाहिए, जिससे छात्रों को सोशल मीडिया के लाभ व हानि दोनों ही पहलू के विषय में जानकारी हो सके। साथ ही आज जरूरत है युवा सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का उपयोग सकारात्मक सूचनाओं के अदान-प्रदान में करे।

AUTHOR(S) CONTRIBUTION

The writers affirm that they have no connections to, or engagement with, any group or body that provides financial or non-financial assistance for the topics or resources covered in this manuscript.

CONFLICTS OF INTEREST

The authors declared no potential conflicts of interest with respect to the research, authorship, and/or publication of this article.

PLAGIARISM POLICY

All authors declare that any kind of violation of plagiarism, copyright and ethical matters will take care by all authors. Journal and editors are not liable for aforesaid matters.

SOURCES OF FUNDING

The authors received no financial aid to support for the research.

REFERENCES

1. https://www.un.org/esa/socdev/documents/youth/fact-sheets/youth-definition.pdf 27/11/2025.

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

चन्द्र प्रकाश & महिपाल मेहरा (2024). ***सोशल मीडिया के उपयोग से युवाओं में बढ़ता सामाजिक-सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों का ह्रास: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन.*** International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews. 3(2). 218-229.

2. United Nations Commission for Social Development Resolutions, E/2007/26 & E/CN.5/2007/, 2007 28/11/2025.
3. https://jgu.edu.in/blog/2024/02/22/what-are-the-different-types-of-media/28/11/2025.
4. www.apa.org/topics/social-media-internet 28/11/2025.
5. https://dictionary.cambridge.org/dictionary/english/social-media 28/11/2028.
6. मुकर्जी, आर. (2018). 'सामाजिक विचारधारा' विवेक प्रकाशन, विवेक प्रकाश जवाहर नगर दिल्ली-110007, पृ०स० 394-406 |
7. नागला, बी०. के०. (2021). 'भारतीय समाजशास्त्रीय चिन्तन', रावत पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली 02, पृ०स० 54-681
8. सिंह, बी. (2017). "युवाओं पर सोशल मीडिया का प्रभाव", आई० जे० आर० ए० आर० पत्रिका, खण्ड 4, अंक 4, पृ०स० 794-802 |
9. राबिया, एम., और अन्य. (2020). 'युवाओं पर सोशल मीडिया का प्रभाव, खण्ड 11, अंक 31
10. शर्मा, ओ. (2017). "सोशल मीडिया का बढता उपयोग युवा पीढी के लिए अवसर एवं चुनौतियां के विशेष संदर्भ में", आई० जे० ए० ई० आर०, खण्ड 9, अंक 4, पृ०स० 191-200 |
11. मेहता, एस. के.. (2021). "भारत में गामीण युवाओं द्वारा सोशल मीडिया का उपयोग" बाईलिग्वल अनुसंधान पत्रिका, खण्ड 9, अंक 4, पृ०स० 151-154 |

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License